गद्य खंड

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गद्य व पद्य में क्या अंतर है?

उ०– गद्य और पद्य की विषय-वस्तु, भाषा-शैली आदि में पर्याप्त अंतर है। गद्य-साहित्य की विषय-वस्तु प्राय: हमारी बोध-वृत्ति पर आधारित होती है और काव्य की हमारी संवेदनशीलता पर। विषय अधिकांशत: वही होते हैं, जिनके बारे में हम अधिक सोचते हैं। गद्य मस्तिष्क के तर्कप्रधान चिंतन की उपज है। इसके मुख्य विषय हमारे दैनिक कार्य-कलाप, ज्ञान-विज्ञान, कथा, वर्णन, व्याख्या आदि हैं। संक्षेप में, काव्य का संसार बहुत कुछ काल्पनिक है, किंतु गद्य का व्यावहारिक।

2. वर्तमान हिंदी भाषा किस बोली का साहित्यिक रूप है?

उ०– वर्तमान हिंदी भाषा खड़ीबोली का साहित्यिक रूप है।

3. 'हिंदी गद्य साहित्य के विकास' का विभाजन उनके काल के अनुसार कीजिए।

उ०– अध्ययन की दृष्टि से हिंदी गद्य साहित्य के विकास को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है—

(अ)	पूर्व भारतेंदु युग अथवा प्राचीन युग	–	13वीं शताब्दी से सन् 1868 ई. तक
(ब)	भारतेंदु युग	–	सन् 1868 ई. से सन् 1900 ई. तक
(स)	द्विवेदी युग	–	सन् 1900 ई. से सन् 1922 ई. तक
(द)	शुक्ल युग (छायावादी युग)	–	सन् 1919 ई. से सन् 1938 ई. तक
(य)	शुक्लोत्तर युग (छायावादोत्तर युग)	–	सन् 1938 ई. से सन् 1947 ई. तक
(र)	स्वातन्त्र्योत्तर युग	–	सन् 1947 ई. से अब तक

4. हिंदी का पहला ग्रंथ कौन-सा है?

उ०– देवसेन द्वारा रचित श्रावकाचार, हिंदी का पहला ग्रंथ है।

5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने खड़ीबोली गद्य का प्रारंभ कौन-सी कृति से माना है?

उ०– आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने खड़ीबोली गद्य का प्रारंभ अकबर के दरबारी कवि गंग द्वारा लिखित 'चंद-छंद बरनन की महिमा' से माना है।

6. हिंदी गद्य के विकास में समाचार-पत्रों की क्या भूमिका है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– हिंदी गद्य के विकास में समाचार-पत्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। समाचार-पत्र हिंदी साहित्य की प्रत्येक विधा के बारे में अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत कर इनका प्रचार करते हैं। सर्वप्रथम दैनिक समाचार-पत्र 'समाचार सुधावर्षण' तथा उत्तर प्रदेश से प्रसारित पहला समाचार-पत्र 'बनारस अखबार' माना गया है। हिंदी का सर्वप्रथम साप्ताहिक समाचार-पत्र 'उदंत मार्तंड' कोलकाता से प्रकाशित हुआ था।

7. भारतेंदु युग की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उ०– भारतेंदु युग में लेखकों ने पूर्ववर्ती लेखकों की एकांगिता और भाषा-संबंधी दोषों से बचते हुए हिंदी गद्य का स्वच्छ, संतुलित और शिष्ट रूप सामने रखा। इन्होंने संस्कृत के सरल शब्दों को लेने के साथ-साथ सर्वसाधारण में प्रचलित विदेशी शब्दों को भी ग्रहण किया। तद्भव और देशज शब्द तो इनकी भाषा में थे ही। इनके अतिरिक्त कहावतों और मुहावरों के प्रयोग से भी इन्होंने भाषा को सजीवता प्रदान की।

8. द्विवेदी युग कौन-से साहित्यकार के नाम पर पड़ा? इस युग की समय-सीमा लिखिए।

उ०– भारतेंदु युग के पश्चात आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के महत्वपूर्ण योगदान के कारण इसका नाम द्विवेदी युग पड़ा। इस युग की समयावधि सन् 1900 ई. से सन् 1922 ई. तक है।

9. शुक्ल युग के किन्हीं पाँच गद्यकारों के नाम लिखिए।

उ०– शुक्ल युग के पाँच गद्यकार हैं— (अ) महादेवी वर्मा, (ब) जयशंकर प्रसाद, (स) वियोगी हरि, (द) रामकृष्णदास, (य) रामधारी सिंह 'दिनकर'।

10. शुक्लोत्तर युग की भाषा-शैली कैसी थी?

उ०– शुक्लोत्तर युग में शुद्ध, परिष्कृत और परिमार्जित साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया गया। इस युग में लोकोक्तियों, मुहावरों एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग कर भाषा को सरस, सरल एवं व्यावहारिक रूप प्रदान किया गया है। शुक्लोत्तर युग में विवेचनात्मक, वर्णनात्मक और भावात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

11. शुक्लोत्तर युग के कुछ प्रमुख साहित्यकारों के नाम लिखिए।

उ०– शुक्लोत्तर युग के प्रमुख साहित्यकार हैं— आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर', उपेंद्रनाथ 'अश्क', भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, हरिशंकर परसाई, फणीश्वरनाथ 'रेणु', धर्मवीर भारती आदि।

12. शुक्ल युग व शुक्लोत्तर युग की भाषा-शैली में क्या अंतर था?

उ०– शुक्ल युग में कवियों ने अपनी अनोखी प्रतिभा और सृजनशक्ति से उसके लाक्षणिक, अलंकृत, प्रतीकात्मक और वक्रतापूर्ण स्वरूपों को उद्घाटित किया। इन्होंने अपने काव्य ग्रंथों की भूमिकाओं व स्वतंत्र लेखों में नए आकर्षक गद्य का स्वरूप सामने रखा। इस युग में भावुकताप्रदान गद्य के दर्शन भी हुए। शुक्लोत्तर युग में हिंदी गद्य काल्पनिक संसार से उतरकर यथार्थ की भूमि पर आ गया। हिंदी गद्य में अनेक विधाओं का प्रादुर्भाव हुआ तथा अनेक शैलियाँ भी प्रकाश में आईं। गद्य साहित्य की अभिव्यंजना शक्ति अत्यंत परिष्कृत हो गई।

13. भारतेंदु युग की पाँच विशेषताएँ लिखिए।

उ०– भारतेंदु युग की पाँच विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(अ) इस युग में लेखकों ने पूर्ववर्ती लेखकों की एकांगिता और भाषा संबंधी दोषों से बचते हुए हिंदी-गद्य का स्वच्छ, संतुलित और शिष्ट रूप सामने रखा।

(ब) भारतेंदु युग का गद्य अत्यंत सजीव है।

(स) इस युग के लेखकों में अपनी भाषा, अपनी जाति और अपने राष्ट्र के उत्थान के लिए बड़ी अकुलाहट थी।

(द) भारतेंदु युग ने नवयुग की नई लहर को घर-घर पहुँचाने का अथक प्रयास किया था।

(य) कहावतों व मुहावरों के प्रयोग से भी इन्होंने भाषा को सजीवता प्रदान की।

14. 'सरस्वती' पत्रिका के प्रमुख संपादक का नाम लिखिए।

उ०– 'सरस्वती' पत्रिका के प्रमुख संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं।

15. जयशंकर प्रसाद के नाटकों की विशेषताएँ बताइए।

उ०– नाटकों के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों का महत्वपूर्ण योगदान है। उनके नाटकों में देश के प्राचीन गौरव के चित्र हैं और उनमें संस्कृति और राष्ट्र-प्रेम की भावनाओं के रंग पर्याप्त गहरे हैं। चरित्र-चित्रण, कथोपकथन व उद्देश्य की दृष्टि से प्रसाद के नाटकों की महत्ता असंदिग्ध है। इनके नाटक अभिनेयता की दृष्टि से कठिन हैं।

16. द्विवेदी युग में 'सरस्वती' पत्रिका के अतिरिक्त और कौन-कौन सी महत्वपूर्ण पत्रिकाओं का योगदान रहा?

उ०– द्विवेदी युग में 'सरस्वती' पत्रिका के अतिरिक्त इंदु, माधुरी, मर्यादा, सुधा, जागरण, प्रभा, कर्मवीर, हंस व विशाल भारत आदि पत्र-पत्रिकाओं का हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

17. शुक्लोत्तर युग का दूसरा नाम क्या है?

उ०– शुक्लोत्तर युग का दूसरा नाम छायावादोत्तर युग (प्रगतिवादी युग) है।

18. शुक्लोत्तर युग में कौन-कौन सी विधाओं का विकास हुआ?

उ०– शुक्लोत्तर युग में रिपोर्ताज और इंटरव्यू विधाओं का विकास हुआ।

19. निबंध का क्या अर्थ है?

उ०– निबंध का अर्थ है— अच्छी तरह बँधा हुआ। संक्षेप में निबंध वह गद्य रचना कहलाती है, जिसमें लेखक किसी विषय पर अपने विचारों को सजीव, सीमित, स्वच्छंद और सुव्यवस्थित रूप से व्यक्त करता है।

20. निबंध लेखन की परंपरा का आरंभ कब से माना जाता है?

उ०– निबंध लेखन की परंपरा का आरंभ भारतेंदु हरिश्चंद्र से माना जाता है।

21. निबंध के प्रमुख चार भेद कौन-से हैं?

उ०– निबंध के प्रमुख चार भेद हैं—

(अ) विचारात्मक निबंध (ब) भावात्मक निबंध

(स) वर्णनात्मक निबंध (द) विवरणात्मक निबंध

22. हिंदी की पहली कहानी किसे माना जाता है?

उ०– किशोरीलाल गोस्वामी द्वारा लिखित 'इंदुमती' को हिंदी की पहली कहानी माना जाता है।

23. प्रेमचंद जी ने कितनी कहानियाँ लिखीं? इनकी प्रथम और अंतिम कहानियाँ कौन-सी हैं?

उ०– प्रेमचंद जी ने लगभग 300 कहानियाँ लिखीं, जिनमें सबसे पहली कहानी 'सौत' तथा अंतिम कहानी 'कफन' है।

24. उपन्यास का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उ०– उपन्यास का शाब्दिक अर्थ है—'उप' अर्थात् निकट या सामने, 'न्यास' अर्थात् रखना; अर्थात् सामने रखना।

25. कुछ प्रमुख हिंदी उपन्यासकारों के नाम लिखिए।

उ०– प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, विशम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', वृंदावनलाल वर्मा, जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, देवकीनंदन खत्री, धर्मवीर भारती, उपेंद्रनाथ 'अश्क', शिवानी, शैलेश मटियानी, उषा प्रियम्वदा आदि।

26. देवकीनंदन खत्री के तीन उपन्यासों के नाम लिखिए।

उ०– देवकीनंदन खत्री के तीन उपन्यास हैं— चंद्रकांता, चंद्रकांता संतति और भूतनाथ।

27. 'जहाज का पंछी' व 'नदी के द्वीप' के लेखकों के नाम लिखिए।

उ०– 'जहाज का पंछी' के लेखक इलाचंद्र जोशी व 'नदी के द्वीप' के लेखक अज्ञेय हैं।

28. 'नाटक' व 'एकांकी' में क्या अंतर है?

उ०– नाटक और एकांकी में निम्नलिखित अंतर हैं—

(अ) नाटक में अनेक अंक होते हैं, जबकि एकांकी में एक ही अंक होता है।

(ब) नाटक में मुख्य कथा तथा अनेक अंत: कथाएँ होती हैं, जबकि एकांकी एक घटना पर ही आधारित होता है।

(स) नाटक में अधिक पात्र और देश काल विस्तृत होता है, जबकि एकांकी में कम पात्र और देशकाल सीमित होता है।

(द) नाटक बड़ा होने के कारण अधिक समय में अभिनीत होता है, जबकि एकांकी संक्षिप्त होने के कारण कम समय में ही अभिनीत हो जाता है।

29. भारतेंदु हरिश्चंद्र व जयशंकर प्रसाद के प्रमुख नाटकों के नाम लिखिए।

उ०– **भारतेंदु हरिश्चंद्र–** वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, अँधेर नगरी, भारत दुर्दशा, नीलदेवी आदि।

जयशंकर प्रसाद– चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, अजातशत्रु, करुणालय आदि।

30. भारतेंदु युग के किन्हीं पाँच नाटककारों के नाम लिखिए।

उ०– भारतेंदु युग के पाँच नाटककार हैं— (अ) श्रीनिवासदास, (ब) राधाकृष्णदास, (स) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', (द) सीताराम वर्मा, (य) प्रतापनारायण मिश्र।

31. डॉ. रामकुमार वर्मा के प्रथम एकांकी संग्रह का नाम लिखिए। यह कब प्रकाशित हुआ?

उ०– डॉ. रामकुमार वर्मा का एकांकी नाटकों का प्रथम संग्रह 'पृथ्वीराज की आँखें' है। यह सन् 1936 ई. में प्रकाशित हुआ।

32. पाँच प्रमुख एकांकीकारों के नाम लिखिए।

उ०– पाँच प्रमुख एकांकीकार हैं— (अ) रामकुमार वर्मा, (ब) सेठ गोविंददास, (स) उदयशंकर भट्ट, (द) उपेंद्रनाथ 'अश्क', (य) विष्णु प्रभाकर।

33. 'आलोचना' विधा की विशेषताएँ बताइए।

उ०– किसी वस्तु का सूक्ष्म अध्ययन करना, जिससे उसके गुण-दोष प्रकट हो जाएँ, आलोचना के क्षेत्र में आता है। अत: जब किसी साहित्यकार की किसी रचना का अध्ययन करके उसके गुण-दोष प्रकट किए जाते हैं, उसे आलोचना कहते हैं।

34. कुछ प्रमुख आलोचना लेखकों के नाम लिखिए।

उ०– आचार्य रामचंद्र शुक्ल, बाबू श्यामसुंदर दास, पदमसिंह शर्मा, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेन्द्र, रामस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ. रामविलास शर्मा, नंद दुलारे वाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा नामवर सिंह आदि हिंदी साहित्य के प्रमुख आलोचक हैं।

35. 'आत्मकथा' व 'जीवनी' में क्या अंतर है?

उ०– आत्मकथा लेखक के स्वयं के जीवन पर आधारित होती है, जिसमें लेखक स्वयं अपने जीवन की कथा को पाठकों के समक्ष आत्मीयता के साथ रखता है। किसी महान व्यक्ति के जीवन की जन्म से मृत्यु पर्यंत सभी महत्वपूर्ण घटनाओं को जब कोई लेखक प्रस्तुत करता है, तब वह विधा जीवनी कहलाती है।

36. 'रेखाचित्र' व 'संस्मरण' में क्या अंतर है?

उ०– रेखाचित्र व संस्मरण में मूल अंतर यह है कि रेखाचित्र में कलात्मक रेखाओं के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना के बाह्य तथा आंतरिक स्वरूप का शब्द-चित्र इस प्रकार व्यक्त किया जाता है कि पाठक के हृदय में उसका सजीव तथा यथार्थ चित्र अंकित हो जाए। इसमें चित्रकला व साहित्य का सुंदर समन्वय दिखाई पड़ता है। संस्मरण उस विधा को कहा जाता है जिसमें लेखक द्वारा अपनी स्मृति के आधार पर किसी व्यक्ति, परिस्थिति अथवा विषय पर कोई लेख लिखा जाता है।

37. दो रेखाचित्र लेखकों व दो संस्मरण लेखकों के नाम लिखिए।

उ०– रेखाचित्र लेखक– (अ) महादेवी वर्मा (ब) अमृतराय

संस्मरण लेखक– (अ) रामवृक्ष बेनीपुरी (ब) देवेंद्र सत्यार्थी

38. 'डायरी' विधा की विशेषताएँ बताइए।

उ०– यथार्थ चित्रण, तिथिवार क्रमबद्धता, लेखक के निजी दृष्टिकोणों की घटना से संबंधित अभिव्यक्ति आदि डायरी साहित्य की विशेषताएँ हैं। यह लेखक के स्वयं के जीवन से संबंधित होती है।

39. 'रिपोर्ताज' विधा की विशेषताएँ लिखिए।

उ०– रिपोर्ताज लेखक के लिए स्वयं घटना का प्रत्यक्ष निरीक्षण करना आवश्यक है, इसमें कल्पना का कोई स्थान नहीं होता। इसका उपयोग पत्रकारिता के क्षेत्र में अधिक होता है। घटना का यथार्थ चित्रण, कुशल अभिव्यक्ति, प्रभावोत्पादकता आदि रिपोर्ताज की विशेषताएँ हैं।

40. 'लघु कथा' विधा के दो लेखकों के नाम लिखिए।

उ०– 'लघु कथा' के दो लेखक हैं– (अ) विष्णु नागर (ब) चित्रा मुद्गल।

(ख) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. शुक्ल युग की समय-सीमा है–

(अ) 1868 ई.-1900 ई. (ब) **1919 ई.-1938 ई.**

(स) 1938 ई.-1947 ई. (द) 1900 ई.- 1922 ई.

2. 'चंद छंद बरनन की महिमा' के रचनाकार हैं–

(अ) **कवि गंग** (ब) पं. दौलतराम

(स) लल्लूलाल (द) लक्ष्मण सिंह

3. 'योगवाशिष्ठ' के रचनाकार हैं–

(अ) **रामप्रसाद निरंजनी** (ब) कवि गंग

(स) लल्लूलाल (द) देवसेन

4. उत्तर प्रदेश से प्रसारित पहला समाचार पत्र है–

(अ) समाचार सुधावर्षण (ब) हिंदुस्तान टाइम्स

(स) **बनारस अखबार** (द) उदंत मार्तंड

5. हिंदी का सर्वप्रथम साप्ताहिक, समाचार पत्र है–

(अ) **उदंत मार्तंड** (ब) समाचार सुधवर्षण

(स) बनारस अखबार (द) हिंदुस्तान टाइम्स

6. 'आर्य समाज' के संस्थापक थे–
(अ) **स्वामी दयानंद सरस्वती** (ब) राजाराम मोहनराय
(स) लक्ष्मण सिंह (द) इनमें से कोई नहीं

7. 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक हैं–
(अ) लल्लूलाल (ब) सदल मिश्र
(स) पं. दौलतराम (द) **इंशा अल्ला खाँ**

8. 'नासिकेतोपाख्यान' के रचनाकार हैं–
(अ) रामप्रसाद निरंजनी (ब) **सदल मिश्र**
(स) लल्लूलाल (द) इनमें से कोई नहीं

9. बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' कौन-से युग के साहित्यकार हैं?
(अ) **भारतेंदु युग** (ब) द्विवेदी युग
(स) शुक्ल युग (द) आधुनिक युग

10. वियोगी हरि किस प्रकार के गद्य के लिए प्रसिद्ध हैं?
(अ) असंदिग्ध (ब) हास्य-व्यंग्य प्रधान
(स) **भावुकता प्रधान** (द) इनमें से कोई नहीं

11. भगवतीचरण वर्मा कौन-से युग के लेखक हैं?
(अ) भारतेंदु युग (ब) **शुक्लोत्तर युग**
(स) छायावादी युग (द) द्विवेदी युग

12. 'कफन' कहानी के लेखक हैं–
(अ) **प्रेमचंद** (ब) जयशंकर प्रसाद
(स) किशोरीलाल गोस्वामी (द) भारतेंदु हरिश्चंद्र

13. 'तारा' कौन-सी विधा की रचना है?
(अ) कहानी (ब) नाटक
(स) **उपन्यास** (द) एकांकी

14. इनमें से इलाचंद्र जोशी का उपन्यास है–
(अ) परख (ब) नदी के द्वीप
(स) गबन (द) **जहाज का पंछी**

15. 'करुणालय' कौन-सी विधा की रचना है?
(अ) **नाटक** (ब) कहानी
(स) निबंध (द) रिपोर्ताज

16. 'सिंदूर की होली' किसकी कृति है?
(अ) हरिशंकर प्रेमी (ब) जयशंकर प्रसाद
(स) **लक्ष्मीनारायण मिश्र** (द) इनमें से कोई नहीं

17. 'पृथ्वीराज की आँखें' एकांकी के लेखक हैं–
(अ) **रामकुमार वर्मा** (ब) जैनेंद्र कुमार
(स) सेठ गोविंददास (द) उदयशंकर भट्ट

18. 'मेरी आत्मकथा' के लेखक हैं–
(अ) नंद दुलारे वाजपेयी (ब) अज्ञेय
(स) **राजेंद्र प्रसाद** (द) इनमें से कोई नहीं

19. निम्न में से 'रेखाचित्र' विधा के प्रसिद्ध लेखक हैं–
(अ) प्रेमचंद (ब) **महादेवी वर्मा**
(स) देवेंद्र सत्यार्थी (द) इंशा अल्ला खाँ

20. निम्नलिखित में से एक कथन सत्य है, उसे पहचानकर लिखिए–

(अ) **श्रीनिवासदास भारतेंदु युग के लेखक हैं।** (ब) जैनेंद्र शुक्ल युग के लेखक हैं।

(स) राधाचरण गोस्वामी शुक्ल युग के लेखक हैं। (द) गुलाबराय भारतेंदु युग के लेखक हैं।

21. निम्नलिखित कथनों में एक कथन सत्य है, पहचानकर लिखिए–

(अ) रामचंद्र शुक्ल प्रसिद्ध नाटककार हैं।

(ब) **प्रेमचंद कहानीकार और उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं।**

(स) देवकीनंदन खत्री प्रसिद्ध आलोचनाकार हैं।

(द) प्रेमचंद प्रसिद्ध कवि हैं।

22. निम्नलिखित कथनों में से एक कथन सत्य है, उसे पहचानकर लिखिए–

(अ) **'सरस्वती' के प्रमुख संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं।**

(ब) 'गोदान' के लेखक जयशंकर प्रसाद हैं।

(स) 'एक घूँट' प्रसाद जी की प्रसिद्ध कहानी है।

(द) 'हंस' प्रतापनारायण मिश्र जी का प्रसिद्ध नाटक है।

23. निम्नलिखित कथनों में से एक कथन सत्य है,उस सत्य कथन को पहचानकर लिखिए–

(अ) 'अँधेर नगरी' नाटक के लेखक प्रेमचंद जी हैं।

(ब) **डॉ. रामविलास शर्मा हिंदी साहित्य के प्रमुख आलोचक हैं।**

(स) 'मेरी आत्मकथा' के लेखक भुवनेश्वर प्रसाद जी हैं।

(द) डॉ. नगेंद्र प्रसिद्ध कवि हैं।

24. निम्नलिखित में से एक कथन सत्य है, उसे पहचानकर लिखिए–

(अ) **'वे सात और हम' संस्मरण विधा की रचना है।**

(ब) 'अजातशत्रु' जयशंकर प्रसाद का प्रसिद्ध उपन्यास है।

(स) 'तितली' प्रेमचंद जी की प्रसिद्ध कहानी है।

(द) 'सरयूपार की यात्रा' राहुल सांकृत्यायन की प्रसिद्ध रचना है।

25. निम्नलिखित में से कोई एक कथन सत्य है, उसे पहचानकर लिखिए–

(अ) लल्लूलाल लघु कथाएँ लिखते थे।

(ब) पद्म सिंह शर्मा गद्य-काव्य विधा में रचनाएँ लिखते थे।

(स) **प्रभाकर माचवे एक अच्छे रिपोर्ताज लेखक हैं।**

(द) 'रक्षाबंधन' हरिशंकर प्रेमी की प्रसिद्ध कहानी है।

1. मित्रता (आचार्य रामचंद्र शुक्ल)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म 4 अक्टूबर सन् 1884 ई. को बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था।

2. शुक्ल जी के पिता का नाम व व्यवसाय क्या था?

उ०– शुक्ल जी के पिता का नाम चंद्रबली शुक्ल था, जो राठ (हमीरपुर) तहसील में कार्यरत थे।

3. शुक्ल जी को 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' से किसने संबद्ध किया?

उ०– शुक्ल जी को 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' से बाबू श्यामसुंदर दास जी ने संबद्ध किया था।

4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल को किन-किन प्रमुख भाषाओं का ज्ञान था?

उ०– आचार्य रामचंद्र शुक्ल को बंगला, संस्कृत, अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू व फारसी भाषा का ज्ञान था।

5. आचार्य जी ने मिर्जापुर के किस स्कूल में नौकरी की थी?

उ०– आचार्य जी ने मिर्जापुर के मिशन स्कूल में नौकरी की थी।

6. आचार्य रामचंद्र शुक्ल किस विधा-लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं?

उ०– आचार्य रामचंद्र शुक्ल आलोचना-विधा लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं।

7. शुक्ल जी द्वारा रचित दो निबंध संग्रह बताइए।

उ०– 'विचारवीथी' और 'चिंतामणि' शुक्ल जी द्वारा रचित दो निबंध संग्रह हैं।

8. शुक्ल जी के दो आलोचना ग्रंथों के नाम बताइए।

उ०– 'रस मीमांसा' व 'भ्रमरगीत' शुक्ल जी के दो आलोचना ग्रंथ हैं।

9. ''आचार्य रामचंद्र शुक्ल एक सफल युग प्रवर्तक थे।'' सिद्ध कीजिए।

उ०– आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपनी अद्वितीय निबंध रचनाओं से हिंदी साहित्य को एक नवीन एवं उपयोगी दिशा प्रदान की। इन्होंने अपनी महत्वपूर्ण आलोचनात्मक कृतियों के द्वारा आलोचना के क्षेत्र में युगांतर उपस्थित किया और नवीन आलोचना पद्धति का विकास किया। इनके अभूतपूर्व योगदान के कारण ही इनके तत्कालीन युग को 'शुक्ल युग' के नाम से जाना जाता है।

10. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उ०– शुक्ल जी की गद्य साहित्य की भाषा खड़ीबोली है। किसी बात को संक्षेप में कहकर उसे विस्तार से समझाना, इनकी कृतियों की विशेषता रही है। शुक्ल जी ने शैली के रूप में निगमन शैली, वर्णनात्मक शैली, विवेचनात्मक शैली, व्याख्यात्मक शैली आदि शैलियों का प्रयोग किया है।

11. शुक्ल जी का निधन कब हुआ था?

उ०– 2 फरवरी सन् 1941 ई. में हृदयगति रुक जाने के कारण शुक्ल जी का देहांत हो गया था।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के जीवन परिचय व रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– सुप्रसिद्ध समालोचक व निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल का हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान है। इन्होंने अपनी अद्वितीय निबंध रचनाओं से हिंदी साहित्य को एक नवीन एवं उपयोगी दिशा प्रदान की। इन्होंने अपनी महत्वपूर्ण आलोचनात्मक कृतियों के द्वारा आलोचना के क्षेत्र में युगांतर उपस्थित किया और नवीन आलोचना पद्धति का विकास किया। हिंदी के विख्यात साहित्यकार बाबू गुलाबराय ने हिंदी साहित्य में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की प्रशंसा में कहा था, ''यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि गद्य साहित्य की और विशेषत: निबंध साहित्य की प्रतिष्ठा बढ़ाने में शुक्ल जी अद्वितीय हैं। उपन्यास साहित्य में जो स्थान मुंशी प्रेमचंद जी का है, वही स्थान निबंध साहित्य में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का है।'' इनके अभूतपूर्व योगदान के कारण ही इनके तत्कालीन युग को 'शुक्ल युग' के नाम से जाना जाता है।

जीवन परिचय– आचार्य शुक्ल के नाम से विख्यात रामचंद्र शुक्ल जी का जन्म 4 अक्टूबर सन् 1884 ई. को बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम चंद्रबली शुक्ल था, जो राठ (हमीरपुर) तहसील में कार्यरत थे। अपने पिता के पास ही रहकर इन्होंने राठ, हमीरपुर से ही अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। इनकी बचपन से ही हिंदी साहित्य में अत्यधिक रुचि थी। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात ये मिर्जापुर चले गए और वहीं से ही इन्होंने अपनी हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। गणित विषय में रुचि न होने के कारण इन्होंने अपनी इंटरमीडिएट की परीक्षा बीच में ही छोड़ दी। इनके पिता की इच्छा थी कि शुक्ल जी कचहरी में जाकर दफ्तर का काम सीखें, इसलिए इनके पिताजी ने उन्हें वकालत पढ़ने के लिए इलाहाबाद भेजा। पर उनकी रुचि वकालत में न होकर साहित्य में थी। फिर इन्होंने स्वाध्याय से ही बंगला, संस्कृत, अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू व फारसी का ज्ञान अर्जित किया।

अत: परिणाम यह हुआ कि वे वकालत में अनुत्तीर्ण हो गए। शुक्ल जी के पिताजी ने उन्हें नायब तहसीलदार की जगह दिलाने का प्रयास किया, किंतु उनकी स्वाभिमानी प्रकृति के कारण यह संभव न हो सका। इसके बाद कुछ समय तक इन्होंने मिर्जापुर के मिशन स्कूल में चित्रकला के अध्यापक के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यापक के रूप में कार्य किया और फिर 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' से सम्बद्ध होकर 'हिंदी शब्द सागर' के सहायक संपादक का पदभार सँभाला, जो इनसे पूर्व बाबू श्यामसुंदर दास सँभालते थे। शुक्ल जी ने आजीवन हिंदी साहित्य की सेवा की। 2 फरवरी सन् 1941 ई. में हृदय गति रुक जाने के कारण शुक्ल जी का देहांत हो गया।